मधुबन ओम् शान्ति अंक 248 मार्च 2013

परमपिता शिव परमात्मा
ज्योति बिन्दु स्वरूप

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(15-02-13)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के नयनों के नूर, सदा खुश रहने और खुशी बांटने वाले विश्व कल्याण की सेवा में तत्पर निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ, शिव भोलानाथ बाप की हीरे तुल्य जयन्ती, सो ब्रह्मा बाप वा ब्राह्मणों की अलौकिक जयन्ती की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां। मुबारक हो, मुबारक हो।

कितना मीठा, कितना प्यारा शिव भोला भगवान... जिसकी वन्डरफुल जयन्ती हम सब बच्चे हर वर्ष खूब प्यार से, धूमधाम से मनाते हैं। अभी भी सभी ब्रह्मा वत्स इस खुशियों भरे त्योहार पर, परमात्म प्रत्यक्षता करने के लिए बेहद सेवाओं के प्लैन्स बना रहे हैं।

बापदादा ने भी विशेष इशारा दिया है कि इस शिवजयन्ती पर स्वयं शक्तिशाली बन औरों को बापदादा का परिचय दे वारिस क्वालिटी के बच्चे निकालो, अब सबको यह पता चल जाए कि यहाँ शिव परमात्मा का कार्य चल रहा है। समय का भरोसा नहीं, अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिए कोई का भी उल्हना न रह जाए, ऐसा लक्ष्य रख धूमधाम से सेवायें करो। साथ-साथ मन के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर मनजीत जगतजीत बनो। तो बोलो, सभी ऐसा ही तीव्र पुरुषार्थ करते, इस महाशिवरात्रि पर परमात्म प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने की तैयारियां कर रहे हो ना!

मेरी तो यही भावना है कि अब हर एक बाबा का बच्चा भाव-स्वभाव के चक्कर और टक्कर से फ्री हो, परमात्म मोहब्बत में रह मेहनत मुक्त बनें। सदा खुश रहे और खुशी बांटता चले। पराई और पुरानी बातों को भूल, कर्मबन्धन के सब हिसाब-किताब खलास कर फ्री होकर, देह और देह के संबंधों से न्यारा बनें। बापदादा भी यही चाहते हैं कि हर बच्चा सब फिकरातों से फारिग रह पुण्य का खाता जमा करता चले। संगम के इस अमूल्य समय को जरा भी व्यर्थ न जाने दे।

देखो, भारत में इसी संगम के मिलन मेले का यादगार भक्ति मार्ग में कुम्भ मेला कितनी धूमधाम से चल रहा है। लाखों भक्त नदियों के संगम पर कितनी श्रद्धा के साथ स्नान कर स्वयं को धन्य-धन्य मान रहे हैं। हम सब बच्चे तो डायरेक्ट प्रभु मिलन मनाते, अपने भाग्य के गुणगान करते हैं। हम सबको मीठे बाबा ने कितनी अच्छी ऊंची नॉलेज दी है जो हम प्रकृति को, माया को, बाप को और खुद को जान गये। अब इसे अच्छी तरह से मनन चिंतन कर, ज्ञान गंगा में डुबकी लगाते रहें तो पावन बन ही जायेंगे। बाबा कहते बच्चे तुम जहाँ भी जाओ, जहाँ भी रहो वहाँ की अच्छी बातों को ग्रहण कर लो तो अच्छा बन जायेंगे।

तो अपने आप से ऐसी मीठी मीठी रूहरिहान करते स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण ब्रह्मा बाप समान बनाना ही है। जब सभी ब्राह्मण ऐसे मिसाल वा अनुभवी बनें तब अन्य आत्माओं को भी प्रेरणा मिले। बाकी कुम्भ मेले में तो बाबा के बच्चों ने बहुत अच्छी अथक बन सेवायें की हैं, अनगिनत आत्माओं को ज्ञान गंगा में स्नान कराया है, जिसके समाचार आप सबने सुने ही होंगे।

मधुबन बेहद घर में आत्मा परमात्मा के सुन्दर मिलन मेले की रिमझिम चल रही है। बापदादा बच्चों को प्यार के झूले में झुलाते वरदानों से झोली भरते रहते हैं। देश विदेश से हजारों बाबा के नये पुराने बच्चे भाग-भागकर मधुबन पहुंच रहे हैं। बाबा सभी को हर प्रकार से भरपूर कर देता है।

अच्छा - सबको याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

सदा शुभ-चिन्तन में रहो, शुभ-चिन्तक बनो

1) सर्व का सहयोग प्राप्त करने का आधार है शुभ-चिन्तक स्थिति। जो सर्व के प्रति शुभ-चिन्तक है, उनको सर्व से सहयोग स्वत: ही प्राप्त होता ही है। शुभ-चिन्तक भावना औरों के मन में स्नेह की भावना सहज और स्वत: उत्पन्न कर देती है और स्नेह ही सहयोगी बना देता है। जहाँ स्नेह होता है, वहाँ समय, सम्पत्ति, सहयोग सदा न्यौछावर करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

2) सदा शुभ-चिन्तन से सम्पन्न रहो, शुभ-चिन्तक बन सर्व को स्नेही, सहयोगी बनाओ। शुभ-चिन्तक आत्मा सर्व का सहज सर्टिफिकेट ले सकती है। शुभ-चिन्तक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रह सकते हैं, विश्व के आगे विशेष पर्सनैलिटी वाले बन सकते हैं।

3) कोई भी आत्मा हो लेकिन आप शुभ चिंतक रहो और सदा शुभ-चिन्तन करो, व्यर्थ चिंतन नहीं। खराब चिन्तन नहीं, शुभ-चिन्तन। जो शुभ-चिन्तन में और शुभ-चिन्तक हैं वही 21 जन्म के वर्से के अधिकारी बनते हैं। तो दो शब्द सदा याद रखना - शुभ-चिन्तक और शुभ-चिन्तन। कभी परचिन्तन नहीं करना, व्यर्थ चिन्तन भी नहीं करना।

4) कोई की कमजोरी देख वा सुन रहमदिल बन शुभ-चिन्तक बन उनको सहयोग देना ही है। कमजोरी को नहीं देखना है लेकिन सहयोग देना है, इसको कहते हैं शुभ-चिन्तक। सहारे दाता, रहमदिल बन सहयोग दो। उससे किनारा या घृणा नहीं करो, क्षमा करो। परवश के ऊपर कभी घृणा नहीं की जाती है, सहारा दिया जाता है।

5) निन्दा सुनते हुए भी ऐसे ही अनुभव हो कि यह निन्दा नहीं, सम्पूर्ण स्थिति को परिपक्व करने के लिये यह महिमा योग्य शब्द हैं, ऐसी समानता रहे, इसको ही बापदादा के समीपता की स्थिति कह सकते हैं। जरा भी अन्तर ना आवे - ना दृष्टि में, ना वृत्ति में। यह दुश्मन है वा गाली देने वाला है, यह महिमा करने वाला है-यह वृत्ति न रहे। शुभ-चिन्तक आत्मा की वृत्ति वा कल्याणकारी दृष्टि रहे। दोनों प्रति एक समान, इसको कहा जाता है - समानता।

6) अभी अपनी भाषा और वृत्ति चेंज करो। कोई को भी किस समय भी, किस परिस्थिति में, किस स्थिति में देखते हो लेकिन वृत्ति और भाव अगर यथार्थ है तो आपके ऊपर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। कल्याण की वृत्ति और भाव शुभ-चिन्तक का होना चाहिए। अगर यह वृत्ति और भाव सदा ठीक रखो तो फिर यह बातें ही नहीं होंगी। कोई क्या भी करे, कोई आपके आगे विघ्न रूप बने लेकिन आपका भाव ऐसे के ऊपर भी शुभ-चिन्तकपन का हो, इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी वा होली हंस।

7) कोई बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे, फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभ-चिन्तक का अडोल भाव हो, बात पर भाव न बदले। सदा अचल-अटल भाव हो तब कहेंगे होली हंस। फिर कोई बातें देखने में ही नहीं आयेगी। नहीं तो इसमें भी टाइम बहुत वेस्ट होता है।

8) अज्ञानी लोग यह स्लोगन कहते हैं - बुरा न सुनो, न देखो, न सोचो - अब बाप कहते हैं व्यर्थ भी न सुनो, न सुनाओ और न सोचो। सदा शुभ भावना से सोचो, शुभ बोल बोलो, व्यर्थ को भी शुभ-भाव से सुनो - जैसे साइन्स के साधन बुरी चीज़ को परिवर्तन कर अच्छा बना देते हैं, रूप परिवर्तन कर देते तो आप सदा शुभ-चिन्तक, सर्व आत्माओं के बोल के भाव को परिवर्तन नहीं कर सकते? सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो तो सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे।

9) कई बच्चे चतुराई का खेल करते हैं – जिस बात को

समाना चाहिए उसको फैलाते हैं, और जिस बात को फैलाना चाहिए उसको समा देते हैं कि यह तो सब में है। तो सदा स्वयं को अशुद्धि से दूर रखो। मंसा में, चाहे वाणी में, कर्म में वा सम्बन्ध में सम्पर्क में अशुद्धि, संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित बना देगी। समय बीत जायेगा। फिर 'पाना था' इस लिस्ट में हों यह अच्छा लगेगा! इसलिए अपनी प्राप्ति में लग जाओ, शुभचिंतक बनो।

10) कोई भी संकल्प आये तो ऊपर देकर स्वयं नि:संकल्प होकर चलते जाओ। विचार देना, इशारा देना यह दूसरी बात है, हलचल में आना यह दूसरी बात है। तो सदा एकरस। संकल्प दिया और निरसंकल्प बनें। सदा स्व उन्नति और सेवा की उन्नति में बिजी रहो और सर्व के प्रति शुभ चिंतक बनो। जिस भावना से जो संकल्प रखते वह सब पूरा हो जाता है। शुभ संकल्प पूरे होने का साधन है एकरस अवस्था। शुभ चिन्तन, शुभ-चिन्तक – इसी से सब बातें सम्पन्न हो जायेंगी।

11) एक बात - शुभ-चिन्तक। दूसरा - शुभ-चिन्तन, तीसरा - शुभ भावना, यह भावना नहीं कि यह बदले तो मैं बदलूं। उसके प्रति भी शुभ भावना, अपने प्रति भी शुभ भावना और चौथा- शुभ श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप। बस एक शुभ शब्द याद कर लो, इसमें 4 ही बातें आ जायेंगी। बस हमको सबमें शुभ शब्द स्मृति में रखना है।

12) शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक दोनों ही स्थिति में बिजी रहो। जो भी निमित्त हैं, उन्हों को विशेष इस समय अटेन्शन रखना है कि सन्तुष्ट रहना तो है ही लेकिन सब सन्तुष्ट रहें, वायुमण्डल सन्तुष्ट रहे, उसके लिए आपस में कोई न कोई प्लैन बनाते रहो, शुभ-चिन्तक बन सन्तुष्टता का वायुमण्डल बनाओ।

13) जब किसी भी प्रकार की चिंता आवे तो चिन्ता बाप को देकर आप शुभ-चिन्तक होकर रहना क्योंकि बाप सदा आपके साथ कम्बाइण्ड है। जैसे बापदादा सदा हर्षित रहते हैं ऐसे सदा हर्षित रहो। ऐसे नहीं बाप हर्षित हो और बच्चे मुरझाये हुए हों। चेहरा कभी भी मुरझाया हुआ न हो, चाहे पहाड़ भी आ जाए लेकिन पहाड़ को भी आप रुई बना सकते हो।

14) अर्जी को खत्म करने का सहज साधन है - सदा बाप की मर्जी पर चलो। ''मेरी मर्जी यह है'' तो वह मनमर्जी अर्जी की फाइल बना देती है। जो बाप की मर्जी वह मेरी मर्जी। बाप की मर्जी है हरेक आत्मा सदा शुभचिंतन करने वाली, सर्व के प्रति सदा शुभ-चिन्तक रखने वाली स्व कल्याणी और विश्व कल्याणी बनें। इसी मर्जी को सदा स्मृति में रखते हुए बिना मेहनत के चलते चलो।

15) शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक। हर आत्मा के प्रति, चाहे कोई आपके पीछे ही पड़ा रहे, आपका उल्टा मित्र बना हुआ हो। तो भी शुभ-चिन्तन, शुभ-चिन्तक बनना। यह शुभ-चिन्तन ही जादू मन्त्र बन जायेगा। अशुभ सोचने वाला अपने आप चेंज हो जायेगा।